RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

ममता कालिया के दुक्खम–सुक्खम उपन्यास का आर्थिक परिदृश्य

मनोज कुमार

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, एन.आई.आई.एल.एम. विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा)

अर्थ : परिभाषा एवं स्वरूप :–

मनुष्य की जन्म से ही कुछ मूलभूत आवश्यकताएँ होती है, जिनकी पूर्ति के लिए उसे आर्थिक संदर्भ में प्रवेश करना पड़ता है। मनुष्य के जीवन यापन की आधारशिला मनुष्य की आर्थिक स्थिति है। भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार अर्थ की गणना उन चार पुरुषार्थ में की जाती है, जिनकी ओर मनुष्य का ध्यान सदा रहना चाहिए,''इन पुरुषार्थ में अर्थ को धर्म के बाद दूसरा स्थान दिया जाता है और जिन्होंने अपनी सारी जिंदगी धर्म को समर्पित करदी थी। ऐसे लोग भी धर्म, काम और मोक्ष की सिद्धि के लिए अर्थ को आवश्यक मानते हैं।''[1]

आम बोलचाल की भाषा में अर्थ का अभिप्राय धन–संपत्ति आदि से लिया जाता है। अर्थ का तात्पर्य उन वस्तुओं से है जो एक ओर तो उपयोगी है और जिनका क्रय–विक्रय हो सकता है, जो खरीदी बेची नहीं जा सकती, उसे संपत्ति नहीं कह सकते।

अर्थशास्त्र के अनुसार, ''मित्र, पशु, भूमि, धन आदि की प्राप्ति सब धन अर्थात अर्थ कहलाती है।''[2]

धन का शुभ प्रभावमनुष्य के समूचे जीवन पर पड़ता है। मनुष्य के मन में जब धन की लालसा ने जन्म लिया, तबसे ही वह दूसरों का शोषण करता आ रहा है। धन का संशय होने से एकविशेष वर्ग के पास अत्यधिक मात्रा में धन संग्रहित हुआ, तो अन्य वर्ग का आर्थिक शोषण होने के कारण वह निर्धन बन गया। अमीर और अमीर हो गया, गरीब और गरीब हो गया। सारे विश्व में चलने वाली राजनीति की उथल–पुथल के पीछे अर्थ की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

अर्थ की विभिन्न भूमिकाएं :–

मनुष्य की तीनमूलभूत आवश्यकताएँ है– रोटी, कपड़ा और मकान। ये तीनों ही अर्थ पर आधारित है। लेकिन दुःखकी बात है कि आज समाज में भी ये सभी अधूरी है। आज हमारी चेतना जीवन को परिचालित नहीं करती, अपितु आर्थिक व्यवस्था जीवन को भला रही है। धन ही समाज में हमारे सम्बन्धों का निर्धारण कर रहा है। धन ही वह ताकत है, जो समाज में उसे इज्जत, रुतबा एवं पहचान दिलाता है। वर्तमान समाज में मनुष्य का जीवन केवल रोटी, कपड़ा और मकान पर आधारित नहीं है, बल्कि इन मूलभूत आवश्यकताओं के मायने बदल गए हैं। अब अर्थ मनुष्य के जीवन में विभिन्न भूमिकाएं निभा रहा है।

धनके प्रति अतिशय मोह :–

आज की दुनिया में बहुत से व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिन्हें रूपए–पैसे के अलावा कुछ भी नहीं दिखाई देता। लेखिका नेउपन्यास में नत्थीमल को ऐसे ही व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है, जिसे सिर्फ अपनी दुकानदारी और नफे–नुकसान की चिंता है और सारी दुनिया की उसके लिए कोई अहमियत नहीं। नत्थीमल कहते हैं यह आए दिन बाजार बंद करवाना शरीफों का काम नहीं है।''[3]

ओमप्रकाश कहते,''अग्रवाल जी कभी बाजार से ऊपर उठकर भी सोचो। इन नौजवानों की कुर्बानी देखो, लाठी–गोली के आगे निहत्थे खड़े हो जाते हैं। दिन सड़क पर, तो रात जेल मेंबितातेहै।

आज पैसा मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता बन गया है, क्योंकि इसके बिना समाज में अपनी पहचान नहीं होती। धन के लिए आज भाई–भाई का दुश्मन बन गया है। इसका एक उदाहरण दैनिक ट्रिब्यून की हेडलाइन के माध्यम से प्रस्तुत है–''जमीन के लिए भतीजे ने चाचा को मार डाला।''[4]आज धन के बगैर हमारे जीवन की सारी गतिविधियां अवरुद्ध हो जाती है।

बेरोजगारी :–

वर्तमान समय में सबसे भयंकर समस्या बेरोजगारी की है। देश की आजादी के बाद से आज तक सरकार इसको दूर करने की कोशिश लगातार कर रही है, लेकिन बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण इस पर काबू नहीं पाया जा सका है।ममता कालिया ने अपने उपन्यास 'दुःक्खम–सुक्खम' में बेरोजगारी का चित्रण बड़े ही मार्मिक रूप में किया है।लेखिका ने उपन्यास में कवि मोहन के माध्यम से इसे व्यक्त किया है। कवि मोहनदसवीं की परीक्षा पास करके घर से भाग गया। क्योंकि उसके पिताजी चाहते थे कि वह पढ़ाई छोड़कर दुकान पर बैठे और आढ़त का काम संभाले क्योंकि नत्थीमल उसकी पढ़ाई पर खर्च करना बेकार समझ रहा था। तभीकविमोहन ने

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अपनी पढ़ाई का निर्णय खुद लिया और वह घर से भाग गया। वह पढ़ाई भी करता और साथ–साथ ट्यूशन भी करता। कविमोहन की सारी अर्थव्यवस्था उसके इन्हीं दो ट्यूशनों पर टिकी हुई थी। पिता अनेक एहसान जताते हुए किसी तरह उसे पच्चीस रुपयेमहीना देते। इतनी धनराशि में हॉस्टल में रहना, धुले हुए कपड़े पहनना और दो वक्त खाने के जुगाड़ करना हंसी खेल नहीं था। ऊपर से कवि को किताबें खरीदने का चस्का था। ऐसे में ट्यूशनों से मिलने वाले तीस रुपयेमहीने बहुतअहमथे।''[5]

पारिवारिक सम्बन्धों मेंबिखराव :–

धन एक प्रमुख कारण है, आधुनिक समय में पारिवारिक सम्बन्धों में भी बिखराव का।धन की प्राप्ति करने की लालसा व्यक्ति को स्वार्थी बना देती है। जिस कारण परिवार में प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने बारे में सोचता है। उपन्यास में नत्थीमल को पैसे से इतना प्यार है कि उसे परिवार के सदस्य से कोई मतलब नहीं है, चाहे कोईमरे या जिये। कविमोहन ने कहा,''जीजी मरासू पड़ी है और दादा जी अब भी रुपए गिन रहे हैं।''[6]

लेखिका ने कविमोहन को पलायनवादी व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है, जिसे अपने घर–परिवार से ज्यादा अपनी नौकरी की फिक्र है। वह इंदु से कहता है,''सरकारी आदमी को केवल अपने कर्तव्य से बंधा हुआ होना चाहिए। विचारधारा से बंधना अपने गले में चौखटा बांधना है।''[7]

आज धन की संकट ने माता–पिता तथा संतान के पारिवारिक सम्बन्धों के संतुलन को नया रूप दिया है। इसकी अभावग्रस्तता ने शिष्टाचार और नफरत को पूरी तरह से शोख लिया है।

आज निजी से निजी सम्बन्धों ने भी इसके कारण नैतिकता खो दी है। भाई–बहन, माता–पिता किस कदर परस्पर दूर हो गए हैं। आज धन के लिए अपनों को छोड़ देना आम बात हो गई है। परिवार टूटते जा रहे हैं, क्योंकि पैसा ही सब कुछ हो गया है।

अतः निष्कर्षतः रूप में कहा जा सकता है कि ममता कालिया के उपन्यास में आर्थिक वर्णन बहुत ही अच्छे से किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. तुलसीदास, कवितावली, उत्तराखंड, पृष्ठ 207
2. संपादक द्वारका प्रसाद शर्मा, संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृष्ठ 49
3. ममता कालिया, दुक्खम–सुक्खम, पृष्ठ 18
4. वही, पृष्ठ 216
5. वही, पृष्ठ 247

RRIJM 2015, All Rights Reserved